Date :

28/9

पाठ - ३
अपू के साथ ढाई साल

लेखक - सत्यजित राय

जन्म - 2 मई 1921, कोलकाता

मृत्यु - 23 अप्रैल 1992 कोलकाता।

प्रमुख फ़िल्में - अपराजिता, अपू का संसार, जलसाघर, देवी चारुलता, महानगर, गोपी गायेन बाका बायेन, पथेर पांचाली (बांग्ला)
हिंदी - शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति

प्रमुख रचनाएँ - प्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी आदि।

→ इस पाठ मे लेखक ने 'पथेर पांचाली' (बांग्ला 1955) इनके निर्देशन में पहली फ़ीचर फ़िल्म के बारे में लिखा है।

→ इसमें इन्होने अपने अनुभव हमसे साझा किए हैं।

→ इसमे नायक एक छोटा सा लड़का है - जिसका नाम सुबीर बनर्जी है। फिल्म मे इनका नाम अपू था।

शब्दार्थ

कालखंड	समय का एक हिस्सा
स्थगित	कुछ समय के लिए टालना
भाड़ा	किराया
इंटरव्यू	साक्षात्कार
विज्ञापन	इश्तहार
बेहाल	बुरा हाल
नामुमकिन	जो संभव न हो
चित्रित	दिखाया गया
छायाकार	फोटो खींचने वाला
नवागत	नए आए हुए
बौराए हुए	घबराए आए
कंटिन्युइटी	निरंतरता
नदारद	गायब
शॉट्स	दृश्य
बॉयलर	रेल-इंजन में कोयला डालने वाला हिस्सा
अभाव	कमी
निवाला	रोटी का टुकड़ा
दुम	पूँछ
छोर	किनारा
संदर्भ	बारे मे
उलझना	परेशान होना
पुकुर	सरोवर
जाया होना	खराब होना
धीरज	धैर्य
निरभ्र	बिना बादल के आकाश
आसरा	सहारा

ब्रांडी - शरीर को गरम करने का पेय
पाजी - दुष्ट
मुद्दा - विषय
सिरदर्द बनना - समस्या बनना
ध्वस्त - टूटा-फूटा
रिकॉर्डिंग मशीन - दृश्य व ध्वनि सुरक्षित रखने वाली मशीन
साउंड रिकॉर्डिस्ट - आवाज सुरक्षित रखने वाले मशीन को चलाने वाला
सहम जाना - डर जाना
बोलती बंद होना (मुहावरा) - मुँह से आवाज न निकलना
वास्तुसर्प - घर में दिखाई देने वाला सर्प

अभ्यास

प्र.1 पथेर पांचाली फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर- पथेर पांचाली फ़िल्म की शुटिंग का काम ढाई तक चलने के निम्न कारण है -

1. लेखक एक विज्ञापन कंपनी मे काम करते थे, जब भी फुर्सत मिलती तब वे फिलम की शुटिंग करते थे।

2. पैसो की कमी होने पर वे पैसे इकट्ठे करते और बाद मे वापस शुटिंग शुरु करते।

3. फिल्म मे पात्रों और स्थान को लेकर भी समस्याएँ आती रहती थी।

४. तकनीकी पिछड़ेपन के कारण भी शुटिंग रोक दी जाती थी।

प्र. २ अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शुटिंग करते तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती - इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर- इस कथन के पीछे लेखक का यह भाव यह है कि किसी भी चीज़ मे निरंतरता होनी चाहिए ताकि वह स्वाभाविक लगे। 'पथेर पांचाली' फिल्म ने पहले दिन अपू और दुर्गा रेलगाड़ी देखते है। पास ही काशफूलो से भरा हुआ एक बगीचा है। चूँकि यह सीन बहुत बड़ा था इसलिए एक दिन मे शूटिंग करना मुश्किल था बाकी का सीन बाद मे करने का निर्णय किया। सात दिन बाद जब वहाँ पहुँचे तब देखा कि जानवरो ने सारे काशफूल खा लिए। लेखक उसी दृश्य मे अगर अगला सीन शूट करते तो वह पहले वाले सीन से मैल नही खाता और उसकी निरंतरता भंग हो जाती जिससे फिल्म मे वास्तविकता का अभाव हो जाता।

30/9/2020

प्र.3 किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग मे कोई तरकीब अपनाई गई है ?

उत्तर -

'भूलो' नामक कुत्ता व 'श्रीनिवास' (मिठाईवाला) के पात्र वाले दृश्यों में दर्शक यह पहचान नही पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है।

भूलो कुत्ता का दृश्य - इस दृश्य मे अपू भात खाते-खाते तीर कमान छोड़ता है। खाने मे उसका पूरा ध्यान नही है। छोडे गए तीर को वो लेने जाता है। सर्वजया (माँ) बाएँ हाथ मे थाली और दाहिने हाथ से निवाला खिलाती है, पर अपू का भाव देखा कि वह अब भात नही खाएगा इसके बाद वाले शाट्स मे दिखाना था कि सर्वजया थाली मे बचा भात एक गमले मे डाल देती है और भूलो कुत्ता वह भाता खाता है। वह शाट्स उस दिन नही ले पाए क्योंकि अँधेरा भी होने वाला था और पैसे भी नही थे। छह महीने बाद जब शूटिंग करने आए तब पता चला कि वह भूलो कुत्ता मर गया। बाद मे उस कुत्ते से मिलता-जुलता दूसरा कुत्ता लाकर गमले वाला शॉट्स पूरा किया।

श्रीनिवास वाला दृश्य :- घूमते श्रीनिवास मिठाईवाले से मिठाई खरीदने के लिए अपू और दुर्गा के पास पैसे नहीं थे। अपू और दुर्गा उस मिठाईवाले के पीछे-पीछे मुखर्जी के घर तक जाते है

मुखर्जी अमीर आदमी थे । उनका मिठाई खरीदना ही अपू व दुर्गा के लिए खुशी थी । कुछ महीनों के लिए शूटिंग स्थगित हो गई । जब वापस शूटिंग करने आए तब पता चला कि श्रीनिवास मिठाईवाले की भूमिका निभाने वाले की मृत्यु हो गई । तब एक दूसरा आदमी [जिनका चेहरा तो श्रीनिवास से नही मिलता था परन्तु शरीर से वो श्रीनिवास जैसे थे] लाकर बाद वाला सीन पूरा किया ।

प्र:4. 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया ? उसने फ़िल्म के किस दृश्य को पूरा किया ?

उत्तर - 'भूलो कुत्ता' की मृत्यु हो जाने के कारण दूसरा कुत्ता लाया गया । उसने गमले मे से भात खाने का दृश्य पूरा किया ।

प्र:5 फिल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुजर जाने के बाद किस प्रकार फ़िल्माया गया ?

उत्तर - फ़िल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी । श्रीनिवास की मृत्यु हो जाने के कारण दूसरा आदमी लाया गया , जो शरीर से श्रीनिवास जैसा था परन्तु उसका चेहरा मिलता-जुलता नही था । तब उसकी पीठ दिखाकर बाकी दृश्य को फिल्माया गया।

शॉट एक - श्रीनिवास बाँसबन से बाहर आता है ।
शॉट दो - श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाते है।

प्र: 6 बारिश का दृश्य चित्रित करने मे क्या मुश्किल आई और उनका समाधान किस प्रकार हुआ ?

उत्तर - पैसो की कमी के कारण बारिश का दृश्य स्थगित करना पड़ा। बरसात के दिन आए और गए, लेकिन लेखक के पास पैसे नही थे। जब पैसे आए तब शरद ऋतु (अक्टूबर का महीना) आ गई। इस ऋतु मे बारिश का बरसना मुश्किल था। कभी-कभी बादल आते पर बरसते नही। बारिश के इंतजार मे लेखक अपनी टीम के साथ कई दिनो तक देहात मे जाकर बैठे। आखिर एक दिन धुआँधार बारिश हुई जिसमे अपू और दुर्गा भीग रहे है, का दृश्य फ़िल्माया गया। यह शॉट बहुत अच्छा चित्रित हुआ।

प्र: 7 किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर - किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है -

1. कलाकारों का चयन करना।
२. पैसो की कमी।
3. दृश्यों की निरंतरता बनाए रखने मे बाधा।
४. शूटिंग के लिए स्थानों का चयन व वहाँ के अधिकारियों से स्वीकृति लेना।

Date :

5 प्राकृतिक समया - (बारिश , धूप , आग आदि) ..
6. पात्रों की मृत्यु या अनुपस्थिति आदि)

पाठ के आस - पास

2. मान लीजिए कि आपको अपने विद्यालय पर एक डॉक्यूमैंट्री फ़िल्म बनानी है। इस तरह की फ़िल्म में आप किस तरह के दृश्यों को चित्रित करेंगे ? फ़िल्म बनाने से पहले और बनाते समय किन बातों पर ध्यान देंगे ?

उत्तर - डॉक्यूमैन्ट्री फिल्म => डॉक्यूमैंट्री फिल्म सच्चाई पर आधारित होती है और इसमें असली लोग ही दिखाए जाते हैं।
विद्यालय पर डॉक्यूमैंट्री फिल्म बनाने के लिए ~~हमें~~ हम विद्यालय के प्रधानाचार्य , शिक्षक , विद्यार्थी आदि की दिन-भर की गतिविधियों को चित्रित करेंगे। जैसे - उन सबसे सवाल पूछेंगे - जीवन मे शिक्षा का क्या महत्व है ?
उनका पसदीदा विषय कौनसा है और क्यों ?
फिल्म बनाने से पहले और बनाते समय हमें वास्तविकता और निरंतरता पर ध्यान देंगे। ताकि लोगों को फिल्म काल्पनिक न लगे। हम वास्तविकता के साथ ~~छोड़~~ कोई छेड़ छाड़ी नहीं करेंगे।

४. पठित पाठ के आधार पर यह कह पाना कहाँ तक उचित है कि फ़िल्म को सत्यजित रॉय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं ?

उत्तर - फिल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप मे देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं यह निम्नलिखित बातों से पता चलता है -

- फिल्म के हर दृश्य में वास्तविकता लाने का प्रयास करना।
- उन्होने किसी अन्य प्रोड्यूसर से पैसा नहीं लगवाया।
- प्राकृतिक वर्षा व काश के फूलों के लिए इंतजार करना।
- फ़िल्म मे निरंतरता बरकरार रखना।
- कुत्ते व मिठाईवाले की भूमिका निभानेवाले की मृत्यु होने पर उनसे मिलते-जुलते पात्र ढूंढने का प्रयास करना।

- इन सभी प्रसंगो से स्पष्ट होता है कि उन्होने फिल्मो से कभी धन कमाने की इच्छा नही रखी।

२. हर क्षेत्र में कार्य करने या व्यवहार करने की अपनी निजी या विशिष्ट प्रकार की शब्दावली होती है। जैसे अपू के साथ ढाई साल पाठ में फ़िल्म से जुड़े शब्द शूटिंग, शॉट, सीन आदि। फ़िल्म से जुड़ी शब्दावली में से किन्हीं दस की सूची बनाइए।

उत्तर -
ग्लैमर
सीन
रिकार्डिंग
लाइट - साउंड स्टार्ट
मेकअप मैन
कंटीन्यूटी
प्लेबैक सिंगर
कैमरा
कट
रोल

३. नीचे दिए गए शब्दों के पर्याय इस पाठ में ढूँढिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

इश्तहार - विज्ञापन
अभिनेताओं की तलाश में निर्देशक ने अखबार में विज्ञापन दिया।

खुशकिस्मती - सौभाग्य
उस व्यक्ति का सौभाग्य था कि उसे अच्छे निर्देशक के साथ काम करने का मौका मिला।

सीन - दृश्य
- हरे-भरे बाग का दृश्य बहुत सुन्दर था।

वृष्टि - बारिश
बाहर बहुत ज़ोरो की बारिश हो रही थी।

जमा - इकट्ठा
उन्होंने धीरे-धीरे कर बहुत सारे पैसे इकट्ठे कर लिए।

भाषा की बात

1. पाठ में कई स्थानों पर तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय सभी प्रकार के शब्द एक साथ सहज भाव से आए हैं। ऐसी भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी प्रिय फ़िल्म पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर अनुच्छेद :- अनुच्छेद का अर्थ होता है पैराग्राफ। जिसमें किसी भी बात को आप अपने विचारों में व्यक्त कर सकते हैं।

तत्सम शब्द :- जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी में आए हैं तथा उनका ज्यों का त्यों हिंदी में प्रयोग होता है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।
जैसे - पुष्प, वृक्ष, दुग्ध, अग्नि, कर्म आदि।

तद्भव शब्द :- जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी मे आए हैं पर भाषा के विकास के साथ जिनके शब्दों का रूप बदल गया है, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।
जैसे - दूध, आग, काम, आदि।

फिल्म पर अनुच्छेद

- मेरी प्रिय फिल्म "बागवान' है। जिसमें पिता की भूमिका अमिताभ बच्चन एवं माता की भूमिका जया मालिनी ने निभाई। इस फिल्म में अपने बच्चों पर अपना सर्वस्व लुटा कर, उन्हें यथासंभव

जीवनोपयोगी हर सुख - सुविधा प्रदान करने वाले माता - पिता की जिम्मेदारियाँ सम्भालने की बारी जब उन बच्चों पर आती हैं, तो उन्हें किस प्रकार उनके माता - पिता उन्हें बोझ लगते हैं। इसी सर्वकालिक सत्य को आधार बनाकर इस फिल्म का निर्देशन किया गया है। इस फिल्म द्वारा आज की युवा पीढी को उनके माता - पिता के प्रति कर्त्तव्य याद दिलाने का प्रयास किया गया है।